# भगवान मल्लीनाथ

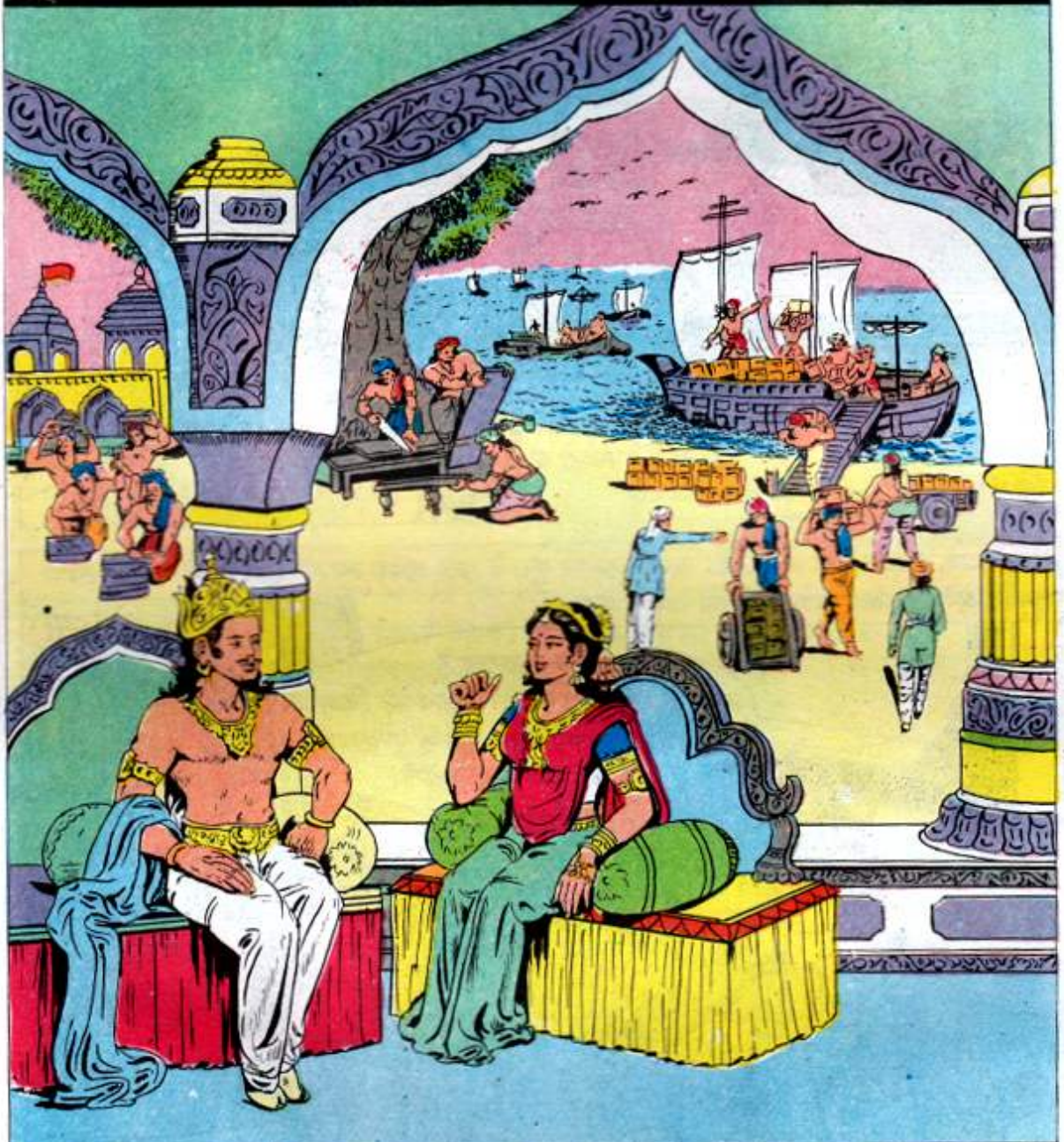

भारत के पूर्वांचल में बसी मिथिलानगरी उन दिनों ज्ञान-विज्ञान, वाणिज्य और कला-कौशल में प्रख्यात थी। यहाँ के इक्ष्वाकुवंशी राजा कुंभ राजनीति के साथ ही अध्यात्म विद्या में भी गहरी रुचि रखते थे। राजा कुंभ की रानी थी प्रभावती।

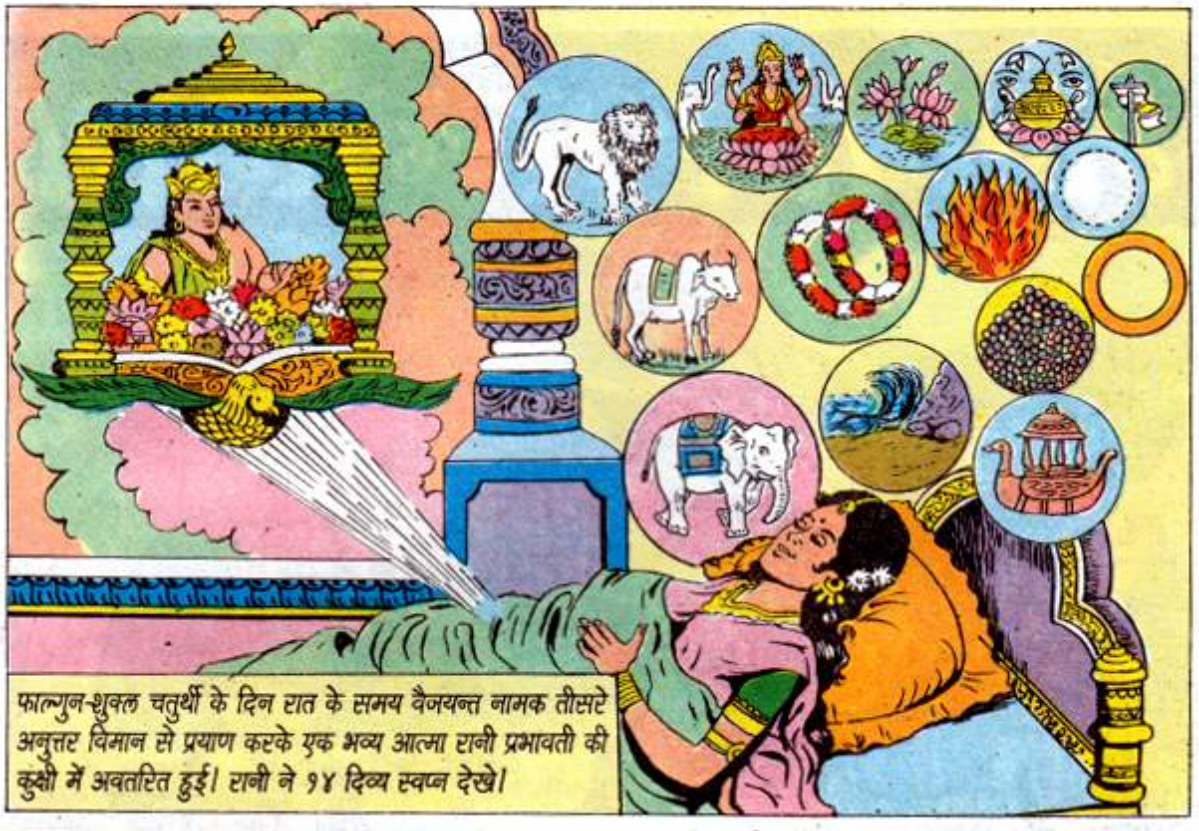

फाल्गुन-शुक्ल चतुर्थी के दिन रात के समय वैजयन्त नामक तीसरे अनुत्तर विमान से प्रयाण करके एक भव्य आत्मा रानी प्रभावती की कुक्षी में अवतरित हुई। रानी ने १४ दिव्य स्वप्न देखे।

दिव्य स्वप्न देखकर रानी जाग उठी। उसने महाराज कुंभ के पास आकर स्वपनों के विषय में बताया। स्वप्न सुनकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुये राजा ने कहा–

वाह ! लगता है सम्पूर्ण संसार का सौभाग्य आप पर निछावर हो गया है। आप किसी महान् पुण्यशाली सन्तान की माता बनोगी।

प्रातःकाल स्वप्न फल जानने के लिये राजा ने स्वप्न शास्त्री को बुलाया–

महाराज ! ऐसे शुभ स्वप्न देखने वाली माता किसी तीर्थंकर या चक्रवर्ती को जन्म देती है।

राजा ने प्रसन्न होकर स्वप्न पाठकों को सम्मानित करके विदा किया।

गर्भ के तीसरे महीने रानी के मन में एक इच्छा उत्पन्न हुई। उसने राजा से निवेदन किया–

महाराज ! मेरा मन हो रहा है मैं रोज लाल-पीले-सफेद पचरंगे सुगंधित ताजा फूलों से सजी शय्या पर सोऊँ। सुगंधित मालाएँ पहनूँ...!

महारानी ! आपकी इच्छा पूर्ति करना हमारा कर्त्तव्य है।

राजा के आदेश से दासियाँ प्रतिदिन रानी की सेज को ताजे फूलों से सजा देतीं। चम्पा, चमेली के सुगंधित फूलों की वेणियाँ लगातीं। रंगबिरंगे गुलदस्तों (मल्ल) से रानी का कक्ष हर समय महकता रहता।